सिद्धान्त और जीवन

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

सिद्धान्त और जीवन एक सिक्के के दो पहलू हैं। दोनों से विकास होता है। सिद्धान्त का अर्थ है समाज द्वारा मान्य कुछ मूल्य। सिद्धान्त से ही व्यवस्था बनी रहती है। सिद्धान्त एक मर्यादा है। जीवन के सभी क्षेत्रों में इसका पालन करना पड़ता है। सिद्धान्त से जीवन का विकास होता है। जीवन कैसे जिया जाये यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। सिद्धान्त और जीवन एक ऐसा विषय है जिसमें लोगों को बौद्धिक और सांस्कृतिक मूल्यों से अवगत कराया गया है। जीवन क्या है? जन्म के साथ जीवन प्रारंभ हो जाता है। बचपन आनन्द के साथ व्यतीत होता है। जैसे–जैसे उम्र बढ़ती जाती है वैसे–वैसे जिम्मेदारियों का भी एहसास होने लगता है। जीवन महत्वपूर्ण है। हर व्यक्ति जीवन जीता है। आयुष्य कर्म के अनुसार जीवन चलता है। जन्म के साथ मृत्यु भी शुरू हो जाती है। जन्म और मृत्यु के बीच के अन्तराल को जीवन कहते हैं। जीवन के अनुपात में हम समाज को क्या देते हैं, यह महत्वपूर्ण है। हर देश में बहुत से लोग रहते है। भारत में तो जनसंख्या का बोझ इतना अधिक है कि विकास करने के बावजूद भी वह परिलक्षित नहीं हो पाता। इसका मुख्य कारण यह है कि जनसंख्या की वृद्धि के अनुपात में विकास में वृद्धि नहीं हो रही है। इसलिए विकास का लाभ समाज के हर वर्ग को नहीं मिल पाता। कुछ महापुरूष अपने जीवन के अल्पकाल में ऐसे सिद्धान्त स्थापित कर गये कि उनका जीवन स्मरणीय है। श्रीमदाद्यशंकराचार्य, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी जैसे महापुरूषों ने जीवन के थोड़े समय में जो सिद्धान्त स्थापित किये उसका महत्त्व आज तक समाज में स्थापित है। जीवन सिद्धान्तों और संयम से चलता है। जीवन तो सभी जीते हैं किन्तु सबका जीवन जीना समाज के लिए प्रेरणा स्त्रोत नहीं होता। भगवान राम मर्यादा पुरूषोत्तम कहलाते हैं उन्होंने समाज और राष्ट्र में ऐसी मर्यादाएं स्थापित की जो आज के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। प्राण जाय पर वचन न जाई, उनके जीवन का महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त था। राजगद्दी प्राप्त करने की अपेक्षा चौदह वर्ष तक वन में जाकर रहना उन्होने स्वीकार किया।

महात्मा गांधी के जीवन का सिद्धान्त अहिंसा और सत्य था। जीवन की सभी परिस्थितियों में इसका पालन किया। उन्होंने स्वयं सिद्धान्त के अनुसार जीवन जिया और दूसरों को भी अहिंसा पालन करने के लिए प्रेरित किया। कोई भी देश संविधान से चलता है। संविधान एक मर्यादा है और सिद्धान्त है। किसी व्यक्ति विशेष के लिए नहीं बल्कि सभी देशवासियों के लिए सिद्धान्त बनता है। इसका पालन करना सभी देशवासियों का कर्तव्य है।

जो योग्यतम है विकास का लाभ वही ले पाता है। सिद्धान्त भी जीवन का एक पक्ष है। जितने भी महापुरुष हुये हैं उनके जीवन में सिद्धान्तों का बहुत बड़ा महत्व रहा है। भगवान बुद्ध, भगवान महावीर, कबीर, सूर, तुलसी, विवेकानन्द, रविन्द्रनाथ टैगोर और महात्मा गांधी जैसे महापुरुषों ने एक आदर्श जीवन व्यतीत करके समाज को कुछ सिद्धान्त दिया है। यह सिद्धान्त मानव के विकास का सिद्धान्त है। इन महापुरुषों ने केवल सिद्धान्त ही नहीं दिया बल्कि उस सिद्धान्त के अनुसार जीवन–यापन करके दिखलाया भी। स्वामी विवेकानन्द का जीवन इस सम्बन्ध में महत्वपूर्ण है। एक ऐसे परिवार में उन्होंने जन्म लिया जहां पर जीवन के प्रारम्भिक समय में ही विपत्तियों का सामना करना पड़ा। किन्तु विपत्तियों को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। बल्कि उन पर विजय प्राप्त करके समाज को एक नई दिशा दी।

विवेकानन्द के बचपन का नाम नरेन्द्र देव था। जब वे स्वामी रामकृष्ण परमहंस के सम्पर्क में आये तो उनके व्यक्तित्व में आमूलचूल परिवर्तन आ गया और वे नरेन्द्रनाथ से स्वामी विवेकानन्द हो गये। शिकागो के धर्म सम्मेलन में उनका दिया गया भाषण आज भी लोग याद करते हैं। उन्होंने विश्व में भारत को एक नयी पहचान दी। विवेकानन्द वेदान्त दर्शन के प्रचार–प्रसार में लगे रहे। युवकों को सदैव वे प्रेरित करते थे। उठो जागो और मंजिल को प्राप्त करो। अच्छा जीवन जीने के लिए कुछ सिद्धान्त होने चाहिए। सिद्धान्त से ही चरित्र का निर्माण होता है। जिस व्यक्ति का चरित्र गिर जाता है, समाज में उसका कुछ भी महत्व नहीं रहता। ज्ञान का रूपान्तरण चरित्र है। ज्ञान का उपयोग चरित्र निर्माण में होना चाहिए। वेदों, उपनिषदों, आगमों में जीवन जीने के अनेक सिद्धान्त दिये गये हैं। यदि उन सिद्धान्तों का जीवन में उपयोग किया जाये तो जीवन सही दिशा में चलता है। झूठ न बोलो, ईमानदारी सबसे बड़ा गुण है, किसी भी प्राणी को दुःख न दो, माता–पिता की सेवा करो, असतो मा

सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतम् गमय जैसे सिद्धान्त परक वाक्य जीवन को नई दिशा देने वाले है। समाज के लिए जो कुछ भी कहा जाता है उसे समाज याद करता है। महात्मा गांधी ने अहिंसा, सत्य जैसे सिद्धान्तों को पहले जीवन में उतारा फिर उसका लोगों में उपदेश किया। इसीलिए आज इन महापुरुषों का नाम आदर्श के साथ लिया जाता है। किसी भी सिद्धान्त का जीवन में पालन करने से जीवन परिष्कृत और उन्नत होता है। मनुष्य को अपना सामर्थ्य अच्छे कार्यों में लगाना चाहिए। अच्छाई और बुराई दो चीजें हैं। बुराई से दुर्गति होती है और अच्छाई से समाज में सम्मान मिलता है।